भारत की साझी संस्कृति

डॉ. एम.डी. थॉमस

संस्कृति एक सामाजिक अवधारणा है। व्यक्ति और व्यक्ति या समूह और समूह जब एक दूसरे के साथ अपनी जिंदगी को साझाा करते हैं, संस्कृति यूँ ही उभरती है। मतलब यह है, संस्कृति, असल में, साझाी संस्कृति होती है। यह बात पूरी दुनिया पर आम तौर पर और भारत पर खास तौर पर धटित होती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक जमाने में महाबलि केरल पर राज किया करते थे। उनके राज में सब इन्सान बराबर थे और न बीमारी थी, न गरीबी। लोग स्वस्थ और सुखी थे। समृद्धि और खुशहाली इतनी थी कि उनकी शासन 'सुशासन' के लिये जानी जाती थी।

उनकी याद में हर साल ओणम् का पर्व मनाया जाता है, जो कि केरल के सभी समुदाय मिलकर मनाया करते हैं, चाहे वे केरल में हो, केरल के बाहर भारत में ही या विलायत में। जैसे महाबलि साझाी संस्कृति की एक मजबूत मिसाल बने रहे, ठीक वैसे ही ओणम् भी साझाी संस्कृति के जबर्दस्त प्रतीक के रूप में कायम रहता है।

पूरे भारत के संदर्भ में, 'वसुधैवकुटुंबकम्, एकम् सत, विप्रा बहुधा वदंति, अच्छे विचार कहीं स भी आये स्वागत है, सर्वे भवंतु सुखिनः', आदि बातें भारत व अनोखे आदर्श हैं और वे भारत की साझाी विरासत की रीढ़ की हड्डी के समान हैं। जरूरत इस बात की है कि इन आदर्शों को जमीनी स्तर पर लागू किया जाय।

भारत की वजूद भी अपने आप में साझाी संस्कृति की एक मजबूत नजीर है। भारत के निर्माण में बहुतेरी संस्कृतियों और परंपराओं ने योगदान दिया है। सहस्राब्दियों से आदिवासी, द्रविड और आर्य संस्कृतियाँ भारत में रहती हैं। ईसवीं शती के पहले से लेकर जैन और बौद्ध परंपराएँ भारत में मौजूद हैं।

ईसवी सदी से, उसके पहले से और बाद से ईसाई, यहूदी और इस्लामी समुदाय भारत में रहते हैं। कुछ आगे से पारसी, सिक्ख और बहाई परंपराएँ भी भारत में हैं। ये सभी समुदाय भारत के निर्माण में विविध प्रकार से हिस्सेदार रहे। यहाँ तक कि जो मुगल और अंग्रेज भारत पर शासन करने आये थे, उन्होंने भी भारत को बनाने में अहम् योगदान दिया।

साथ ही, भारत के निर्माण का किसी एक नस्ल से मतलब नहीं है। तथाकथित नीची जाति के वाल्मीकि ने इस देश को रामायण-जैसा महाकाव्य दिया और अंबेडकर ने संविधान। इसी क्रम में विविध समुदायों के टाटा, बिड़ला-जैसे कतिपय व्यक्तियों ने भारत को बनाने में अपना-अपना हाथ बँटाया।

इसका मतलब यह है कि किसी एक समुदाय का भारत को अपनी निजी संपत्ति समझाने का हक नहीं है। जितनी भी परंपराओं ने भारत को बनाने में योगदान दिया है, या दूसरे शब्दों में, इस समय भारत में जितने भी नगरिक हैं, उन सबका भारत पर बराबर हक है। भारत उन सबका है। साझाी संस्कृति ऐसी सोच का परिचायक है।

और तो और, भारत में इतनी विविधताएँ हैं कि दुनिया का कोई भी अन्य देश इसका मुकाबला नहीं कर सकता। सियासती दुनिया में राष्ट्रीय और प्रादेशिक दलों का इतना भरमार है कि लगता है कि सियासती अंदाज के तौर-तरीके कोई सीखे तो भारत से सीखे।

इसी क्रम में, भौगोलिक विशेषताएँ, मौसम, विचारधाराएँ, संस्कृतियाँ, धार्मिक परंपराएँ, रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, वेशभूषा, कलात्मक अभिव्यक्तियाँ, आदि को लेकर भारत में जितनी विविधताएँ हैं उतनी विविधताएँ किसी भी अन्य भूभाग में नहीं हैं। इन सब का एक साथ होना भारत की साझाी संस्कृति का जीता-जागता उदाहरण है।

भारत का संविधान विश्व के सबसे खूबसूरत संविधानों में एक है। इसकी पंथ-निरपेक्षता, लोकतंत्र, आदि आदशों में इन्सानी तहजीब खूबियाँ ही झालकती है। बराबरी, सम्मान, इज्जत, न्याय, सहयोग, आदि इन्सानी जिंदगी के चरम मूल्य हैं। संविधान के इन आदर्शों में साझाी संस्कृति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है।

इसके बावजूद, यह बात जायज है कि मानव समाज में किसी भी मामले में सौ फीसदी पूर्णता नहीं हो सकती। सभी देशों में कमियाँ और समस्याएँ हमेशा से रही हैं। ये सदा रहेंगी भी। लेकिन जब समस्याएँ बहुत ज्यादा बढ़ जायेंगी, तब सामाजिक जीवन का अस्त-व्यस्त हो जाना तय है।

कुछ समय से भारत में शरारती तत्व जरूरत से बहुत ज्यादा सक्रिय होता नजर आता है। कोई तानाशाहो के बलबूते लोकतंत्र को चरमराने और नागरिक के हक को छीनने की कोशिश कर रहा है। कोई आजादी की आवाजों के प्रति कड़ाई से असहनशील होकर भारत में गुलामी का माहौल बनाने पर तुला है। कोई देश पर मालिकाना हक जता रहा है और कोई देश की ठेकेदारी कर रहा है। कोई अन्य समुदायों के नागरिकों की देश-भक्ति का इम्तहान लेकर उन्हें प्रमाण-पत्र बाँटने भी लगा है। कोई अपने करतबों से एतराज करने वालों को दूसरे देश के लिय पास्पोर्ट और वीसा मुहैया कराने को भी मुस्तैद दिखाई देते हैं।

इतना ही नहीं, कोई देश को तोड़ने और बाँटने कर उससे नाजायज फायदा उठाने की ताक में है। कोई देश के अलग-अलग समुदायों के दर्मियान नफरत फैलाने और फासला बढ़ाने की फिराक में है। कोई हवाई बातों को मुद्दा बनाकर देश की सामाजिक पर्यावरण को प्रदूषित करने में लगा है। कोई झाूठा इल्जाम लगाकर दूसरे की संपत्ति पर हमला कर उसके आत्म-विश्वास को कमजोर करने और किसी-किसी का कत्ल करने की होड़ में रहता है। कोई कट्टर्वाद, गुण्डागर्दी, जंगलीपन, चालाकी, झाूठ, मनमानी, आदि के जरिये ताकत और पैसे की बाजी मारने में लगा है।

खामियाजा यह है कि भारत का सामाजिक तालमेल और संतुलन लड़खड़ा रहा है। देश में गलतफहमियाँ बढ़ने लगी हैं। विविध समुदायों में आपसी रिश्तों में ढीलापन आ रहा है। देश की राष्ट्रीय धरोहर के रूप में चली आ रही साझाी संस्कृति को हमारी विरासत बिखरती-कमजोर होती नजर आती है। देश पर मंड्रा रहा यह भयानक खतरा, असल में, भारत की एकता और अखण्डता के लिये खुदकुशी के बराबर है, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्रौढ़ और प्रबुद्ध नागरिक को सतर्क और संगठित होकर भारत की अहमियत को बचाने की जरूरत है।

भारत की साझाी संस्कृति को मजबूत करने के लिये मेरे दो सुझााव हैं। पहला है, सभी समुदाय के लोग औरों के देवालय में भी जायें और उनके साथ मिलकर खुदा का दीदार करने की कोशिश करें, पर्वों को मिल-जुलकर मनायें, दूसरे की भाषा सीखने का प्रयास करें और द्सरी परंपराओं से अच्छे मूल्यों को सीखें। इससे अपने-पराया का भेद काफी हद तक छूट जायेगा और 'हम' की भावना के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक समरसता विकसित होगी।

दूसरा है, देश में पिछड़े हुए वर्गों की ओर तरजीही तौर पर तवज्जो देने की जरूरत है। सड़क बनाते वक्त पहले गढ्ढों को सही तरीके से भरना होता है। डामर बिछाने की प्रक्रिया तभी कारगर होगी। ठीक वैसे ही, सबसे पहले महिलाओं को देशीय समाज के आधा हिस्सा मुहैया हो, जिससे वे देश और समाज को बेहतर बनाने की जिम्मेदारी का हिस्सेदार बन सकें। देश के आधे से अधिक की युवा पीढ़ी को सही दिशा के साथ-साथ सामाजिक जीवन में भागीदारी भी मिले।

इसके अलावा, कुछ खास और ठोस कदम भी बेहद जरूरी है। गरीबी रेखा के नीचे जिंदगी गुजारने को मजबूर लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान और इज्जत दिलाने की योजनाबद्ध कोशिशें हो। हाशिए पर, खास तौर पर सड़कों और गलियों पर, सरकाये गये लोगों को मुख्य धारा में लाया जाय। यह देश जितना उच्च तबके के लोगों और ठेकेदारों का है, ठीक उतना ही यह उन लोगो का भी है। जब इस मसले पर अमल हो, तभी साझाी संस्कृति संतुलित और मजबूत बनेगी।

हकीकत में, साझाी संस्कृति 'मिल-जुल कर चलने' या 'सब को लेकर चलने' की तहजीब है। हिंदी फिल्म 'जमीर' का गीत 'हम भी चलें, तुल भी चलो, चलती रहे जिंदगी' इस संदर्भ में सार्थक है। इस देश में सभी परंपराओं, विचारधाराओं और समुदायों के लोग रहें, जैसे किसी भी अच्छे बगीचे के पेड़-पौधे, घास-फूस और फूल हैं। महाबलि का राज-जैसे हर इन्सान और समुदाय को बराबर इज्जत और जीने-बढ़ने के मौके मिले, साझाी संस्कृति की भावना कुछ ऐसी बने।

'वसुधैवकुटुंबकम्' की भावना उसी को नसीब होती है जो 'उदारचरितानाम्' हो। भारत के नागरिक के दिल-दिमाग खुल जाये और सभी समुदाय छोटे-बड़े का भाव रखे बिना एक दूजे से साथ घुल-मिल जाये। अपनी-अपनी आस्था से प्रेरणा पाकर जब सब मिलकर देश को 'खुदा का परिवार' बनाने का प्रयास करें, तब भारत में असल में विश्व-बंधुत्व की भावना कायम होगी। साझाी संस्कृति बस उसी का नाम है।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS